



एकांत और प्रकृति का संग

आज ओशो संदेश के प्रचार-प्रसार में अनेकों ध्यान केंद्र अपनी भूमिका निभा रहे हैं। देश के कई राज्यों में अनेक ध्यान केंद्र प्रतिमाह ध्यान कार्यक्रमों को आयोजित कर रहे हैं। आगामी ध्यान शिविरों तथा राज्यों में स्थित ध्यान केंद्रों की सूची आप ओशो वर्ल्ड पत्रिका के प्रत्येक अंक से प्राप्त कर सकते हैं।

‘दि लाइटनेस ऑफ बीइंग’—मा योग नीलम तथा स्वामी चैतन्य कीर्ति से हुए संवाद को 19 मार्च के हिन्दुस्तान टाइम्स ने चंडीगढ़ से प्रकाशित किया। मा नीलम कहती हैं—ओशो ने त्यागने पर कभी जोर नहीं दिया। उनकी सारी देशना जीवन में कुछ नया जोड़ने की रही है। जीवन सुंदर है और उसे पूरी समग्रता से जीना चाहिए। इसी संवाद में स्वामी कीर्ति ने कहा कि आवश्यकता और इच्छा में एक अंतर है। आवश्यकता अस्तित्व से प्राप्त होती है और परमात्मा ने आपको आवश्यकता से अधिक दिया है। जबकि इच्छाएं स्वयं की निर्मित होती हैं। इसी शृंखला का एक अन्य संवाद दि टाइम्स ऑफ इंडिया ने 19 मार्च को प्रकाशित किया। इंदिरा हॉलिडे होम द्वारा तीन दिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन किया गया, जिसका संचालन मा नीलम द्वारा किया गया। संवाद व शिविर सूचनाओं को दैनिक भास्कर, ट्रिब्यून, दैनिक ट्रिब्यून आदि ने प्रमुखता से छापा।

ओशो मित्र मंडल, कोटा में ओशो संबोधि दिवस पर एक दिवसीय ध्यान शिविर आयोजित हुआ। शिविर की सूचना दैनिक भास्कर, नवज्योति, राजस्थान पत्रिका, कोटा रिपोर्टर, राष्ट्रदूत तथा ब्यूरो आदि समाचार पत्रों ने प्रकाशित किया।

‘दानिश दार्शनिक सोरेन कीर्कगार्ड ने एक पुस्तक लिखी है either/or. उसने अपनी सारी जिंदगी either/or में ही जी। वह उस स्त्री से विवाह करने का निर्णय भी नहीं कर सका जिससे वह प्रेम करता था।’ दि बुक ऑफ विण्डम का यह प्रबंधन 7 मार्च को दि पायनियर में प्रकाशित हुआ। ओशो

कहते हैं कि चुनाव की कोई आवश्यकता नहीं। तुम आध्यात्मिक मत बनो और भौतिकवादी भी मत बनो। दोनों बनो। ज़ोरबा मत बनो और बुद्ध भी मत बनो। दोनों बनो।

मिस्टिक इंडिया के अप्रैल अंक में मा कृष्ण राधा के पुस्तक विमोचन का समाचार छापा है। मा राधा ने पुस्तक के संबंध में कहा कि यह उनकी आत्मकथा नहीं है, मैंने तो केवल अपने व्यक्तिगत परिपेक्ष से वह लिखा है जो मैंने तंत्र के बारे में अपने सद्गुरु ओशो से सीखा था। इसी समाचार को 2 मार्च के हिन्दुस्तान टाइम्स तथा पंजाब केसरी ने भी प्रकाशित किया। पत्रिका के 58 पृष्ठ पर श्री अरुण श्रीवास्तव के विचार प्रकाशित हुए हैं। ‘जीवन क्या है’—ओशो की इस नई पुस्तक के संबंध में वह कहते हैं कि ओशो बताते हैं कैसे जीवन ऊर्जा के प्रति सजग हुआ जाए, कैसे जीवन ऊर्जा का रूपांतरण किया जाये, कैसे जीवन की झूठी प्यासों से मुक्त हुआ जाये..जीवन का मतलब परमात्मा होता है, और विचार नहीं, भाव महत्वपूर्ण होते हैं।’

साधना पथ के मार्च अंक में शांडिल्य पर आधारित ओशो का प्रवचन छापा। इसी पत्रिका में स्वामी कीर्ति की प्रस्तुति में भी एक लेख प्रकाशित हुआ। जागरण सखी ने मार्च अंक में ओशो प्रवचनांश ‘सबसे बड़ा आनंद है ध्यान’ शीर्षक से प्रकाशित किया।

पुरुष के लिए प्रेम और बहुत से जीवन आयामों में एक है, एक डायमेंशन है। लेकिन स्त्री का एक ही डायमेंशन है, एक ही दिशा है—वह प्रेम है। ‘स्त्री की एक ही दिशा है प्रेम’ शीर्षक था 4 मार्च के पंजाब केसरी में छपे प्रवचन का। ‘दुनिया में जिन भी महापुरुषों ने सत्य, सौंदर्य व शिवत्व को जाना एंकात में ही जाना।

Is your remote control in somebody else's hand?
Your emotions, your sentiments, your thoughts — the whole panorama of the mind is manipulated by the outside.
 Scientifically it has become clear, but even without scientific investigation, for thousands of years the mystics have been saying exactly the same thing: all these things that your mind is filled with are not yours; you are beyond them. You get identified with them, and that's the only sin.
 For example, somebody insults you and you become angry. You think you are becoming angry — but ever scientifically, his insult is only a remote control in his hands, you are following that a puppet.
 Now scientists are able to put electrodes in the brain at certain centres. And it is almost unbelievable: the mystics have been talking about those seven hundred centres in the brain for almost seven, eight thousand years. Science has just now discovered that there are exactly seven hundred centres controlling all your behaviour. An electrode can be put at a particular centre — for example anger — with a remote control so you cannot see if anybody is doing anything to you. Nobody insults you, nobody humiliates you, nobody says anything to you, you are sitting idly, happily, and somebody pushes the button of the remote control and you become angry. It is a very strange feeling because you cannot see the reason why you are becoming angry any where. Perhaps you will remember something, you see a man pushing, then the street and you remember that he insulted you, you will find some rationalisations just to console yourself that you are not going mad. Sitting idly... and suddenly feeling so angry without any provocation?
 And the same remote control can work to make you happy. But you will realise that you will give some apparently rational grounds for giggling. And the strangest thing is that when the next time the same button is pushed and you giggle, you will again have the same rationale, the same consolation, the same explanation... that you are not smart.
 If this happens, can you say you are the master of what you are saying? Are you the master of what you are feeling? Certainly there are no electrodes put into you, but biologically exactly the same words is going on. But you are certain because you immediately your mind reacts: 'How beautiful!' This is nothing but remote control. That woman functioned like a remote control and your speech centre simply went into a recorded speech: 'How beautiful!' Mind is a mechanism. If it is not you, it records things from outside and then reacts to outside situation according to the recordings. This is the only difference between a Hindu and a Mohammedan and a Christian and a Jew: they have just got different CDs. Inside it is one humanity. All your religions, all your political ideas, all your cultural attitudes are nothing but recordings. And in certain situations certain recordings are provoked.

MIND & BODY TEMPLE
OSHO takes us through the legend behind Khajuraho's erotic sculptures and considers them as depicting emptiness of desire
**The most graphic, sensual and sensuous sculpture the world has known are on the temple walls of Khajuraho, India. Osho — a man whose gentle and calm — of Khajuraho is carried with figures of youthful and historical origins, and every despite the innocent form of love of these walls.
 Built over 1,000 years ago, the grandeur, beauty and art of these temples have not in any way faded. Osho's insights are erotic sculptures from Khajuraho — the sensual and beautiful young women and happy men are shown in positions even the westerners may find impossible to get into. Legend has it the captain of Khajuraho's defense forces built the temples. He was a Hindu, the beautiful young women of the temple were his lovers. In the first evening, the child bride of this union becomes a ritual and god was a son. Chandrovarman, Hindu and Jain, the second emperor of Central India when she was both mortal and goes to her young wife. The boy grew up and learned the Chandola dynasty. When he was established as a ruler, he had a dream of his mother, inspiring him to build temples that would reveal human passions, and bring about realization of the emptiness of human desire.
 This is Osho from the lack of emptiness on the face in various poses, on the most subtle, beautiful and empty. Osho could be that they have gone beyond pleasure to a state of emptiness. Unconcerned for the last century, these temples have always been a controversy about the philosophy of showing sensuality on their outer walls. Osho explains.
 These temples in Khajuraho are not having pleasure from what they are erasing. It is emptiness. Osho could be that they have gone beyond pleasure to a state of emptiness. Unconcerned for the last century, these temples have always been a controversy about the philosophy of showing sensuality on their outer walls. Osho explains.
 You only enter the temple when you have passed through sexuality with full awareness in all the phases
 In all its dimensions — unless you close to a point when you had an opening for you, only then you enter the temple.
 Osho's view are outside the temple, your interest in them, if you are still concerned about, then the temple is not for you.
 But the message is an inner one. It is the same wall of the temple, the temple is made of it, and you have to pass through the door and into the temple.**

जीवन में ध्यान की अहमियत

ध्यान में मनुष्य में ऊर्जा का क्या प्रभाव तथा विस्फोट होता है... इस साधना से साधक तपोतारा व पुनर्निर्मित हो जाता है...



ओशो
दुनिया, निर्मल, पहले बड़े आगरा भी 1600 साल पहले सम्राट् प्रदिन को विजाने अलनन यह सनाता में मिलती थी, अब यह हम एक दिन में मिलती है। यह जो तबेना, सूचना, हम एक दिन में प्राप्त कर रहे हैं- उसे सोचने व ग्रहण करने में चालीस गुना ज्यादा जमान है। आधुनिक मनुष्य को सोचने में अधिक

करीब हो रहे हैं। जीवन इतना भीम, जना मान में गति कर रहा था कि भूदहन लोग भी इसे ग्रहण करने में सक्षम थे। अब बदलाव अत्यधिक तीव्र हो गया है, ऐसी गति के साथ, कि सबसे बुद्धिमान लोग भी इसे ग्रहण करने में असमर्थ महसूस कर रहे हैं।
प्रतिदिन जीवन फिर होता है और पुनर्जागरण शुरू होता है। तुम सोचना बकात नहीं कर सकते हो; यह एक जीवन भर की प्रक्रिया होती है। मनुष्य के छोर तक तुम्हें सोचना है, केवल जब ही तुम स्वयंसेवा कर सकते हो, परमत्पूजन से बच सकते हो। और दयावत बड़ा है- कालीस मुग़ा ज्यादा।
इस दायन में कैसे प्रारिण हो? उन्हें ध्यान

पुनर्निर्मित करने, उसे तबका बनाएगा। इसमें उभरते ऊर्जा के नए खोज का विस्फोट होगा और वह सारा में जागर आया, बड़ा, तबका सोचने में ज्यादा समर्थ, अपने आँसू में, अपने हृदय में ज्यादा विस्मय लिए- येवारा कह बचने को धाँस।
सोचने का यह दायन और नहीं सोचने को पुराने आदत लोगों को पागल बना रही है। आधुनिक दियारा पर बहुत बड़ा बोझ है और इसे पचाने के लिए, इसे अपनी चेतना के भीतर प्रवेश कोई समय नहीं दिया जाता। यहाँ ध्यान का प्रवेश होता है और महत्पूर्ण बन जाता है। मन को समय दिए बिना, ध्यान में विश्रुत होकर हम सभी सदियों को दबा लेते हैं, जो निरंतर भीतर प्रविष्ट हो रहे हैं। हम सोचने से इनकार कर देते हैं- जमा कहते हैं कि हमारे पास समय नहीं है। यदि सारे प्रकृति प्रती रमते हैं। यदि सारे प्रकृति

जो भी मनुष्य भीड़ से अलग हुआ उसने जरूर मुक्ति पाई।' 5 मार्च के दिव्य हिमाचल ने 'एकांत और प्रकृति का संग' प्रवचन प्रकाशित किया। ओशो की दृष्टि में स्त्री की परिभाषा पर रोशनी डालता एक अन्य प्रवचन 8 मार्च को राजस्थान पत्रिका में भी प्रकाशित हुआ। ओशो कहते हैं—एक स्त्री एक पुरुष की तुलना में अधिक केंद्रित होती है। वह अधिक शांत व धैर्यवान है। वह बीमारियों से अधिक लड़ सकती है और पुरुष से अधिक जीती है।

'विलक्षण प्रतिभा का व्यक्ति भीड़ से संबंध नहीं रखता। वह एकांत और अलग-थलग खड़ा रहता है, एक ऐसे लंबे वृक्ष की भांति जो तारों को छू रहा हो।' दि आप्टरनून डिस्पैच एंड कूरियर ने 9 मार्च को यह प्रवचन प्रकाशित किया। 14 मार्च के दि पायनियर में माइंड एंड बॉडी टैम्पल शीर्षक से लेख प्रकाशित हुआ। खजुराहो के मंदिर के संबंध में ओशो ने कहा है—जब तुम जागरूकता के साथ संभोग और उसके समस्त आयामों से गुजरो, जब संभोग तुम्हारे लिए कोई मायने नहीं रखता, तभी तुम इन मंदिरों में प्रवेश कर सकोगे। नहीं तो तुम बाहर ही रहोगे। अपने प्रवचन में शिवलिंग के रहस्य को बताते हुए ओशो कहते हैं—यह ज्योतिर्मय जो रूप है, यह जो अंडाकार रूप है, यही तुम्हारी आत्मा का रूप है। जिस दिन तुम मां के गर्भ में प्रविष्ट हुए, ठीक शिवलिंग की आकृति का एक प्रकाश-बिंदु मां के गर्भ में प्रविष्ट हुआ।' 15 मार्च के दैनिक जागरण ने इसे प्रकाशित किया। 17 मार्च को राजस्थान पत्रिका में 'दुख को प्रकट कीजिए', 19 को दिव्य हिमाचल में 'जीवन में ध्यान की अहमियत' आदि प्रवचनों को स्थान दिया।

22 मार्च को दैनिक जागरण ने होली के अवसर पर 'सभ्य समाज की जरूरत है होली' लेख प्रकाशित किया। ओशो कहते हैं कि होली छुट्टी का दिन है, जो-जो नालायकी आपको करनी हो, वह आप मजे से कर सकते हैं, उस पर कोई एतराज नहीं करेगा.. बहुत समझदार लोगों ने होली खोजी होगी, जो मनुष्य के मन

भी चाहिए, जिसमें गंदा पानी बाहर निकल जाए।' आप में से अधिकांश पाठकों को इस स्तंभ में छपी सूचनाएं पढ़कर आनंद होता है। अपनी पत्रिकाओं में इस स्तंभ की शुरुआत स्वयं ओशो ने ही करवाई थी। जो पत्र-पत्रिकाएं ओशो के प्रवचनांश प्रकाशित करती हैं, उन्हें हम प्रोत्साहित करें तथा जिनमें कुछ नकारात्मक छपता है, उनका सही-सही उत्तर दें।

दशकों से चलने वाले इस स्तंभ का यही उद्देश्य रहा है कि ओशो प्रेमी पाठक इसके माध्यम से समाचार-पत्रों को ओशो की देशना से पोषित करने का प्रयास अपने-अपने स्तर से करते रहें। आपका शहर छोटा है या बड़ा, वहां से छोटे-बड़े अखबार छपते हैं, जो आज के माहौल में ओशो की वाणी को नियमित प्रकाशित करना चाहेंगे, किसी पुस्तक को क्रमबद्ध रूप से कड़ियों में प्रकाशित करना चाहेंगे। आप उनसे संपर्क कर सकते हैं, प्रवचनांश अथवा उद्धरण प्रकाशित करवा सकते हैं; आपके लिए संभव न हो तो उनकी जानकारी अथवा संपर्क सूत्र हमें भेज सकते हैं। कॉपीराइट इत्यादि की फिक्र नहीं लेनी है—ओशो के वचन मनुष्यता के बोध को विकसित करने के लिए हैं; ऐसे ही जैसे सभी बुद्धों के वचन मानवता के कल्याण के लिए हैं। वे सभी के लिए हैं, सभी को उपलब्ध होने चाहिए। स्मरण रहे, इसमें कंजूसी नहीं करनी है। बांटने का अपना ही आनंद है; जितना बांटो आनंद उतना ही बढ़ता है। ओशो का प्रत्येक प्रेमी ओशो की सुवास को अपने-अपने स्तर पर, अपने-अपने माध्यम से बांटने के लिए स्वतंत्र है। यह कोई व्यवसाय नहीं है—यह हम सबका आनंद है।

—स्वामी प्रेम अभिनंदन

The lightness of being

Jaume Singh
The flood of thoughts, the angst of being wedged between idealism and materialism, the dull disconnection between what people are said to be and what they are, the tangle between body and soul, questions on God's existence, half-hearted attempts to suffering, wish fulfillment, deep suffering and then, the surge of strength. With a string of questions in our mind, as we step into this house in Dehradun, Ma Yoga Neelam, Chair secretary for India and Swami Chaitanya Keerti greet with calm faces. What follows is a two and a half hour of conversation, laughing with questions, seeking their answers, which soon find acceptance in the mind and on our colored face.

"Of course, we begin with pain. An endless river of it. It's there to many of us," smiles Swami Chaitanya. "If you wish to cling to it, nobody can help you. Pain brings in a realization of inner strength and potential; you have to transcend it in the right way. Sufferings have a purpose, either take it as a burden or learn lessons from it." Offers Ma Neelam, "Learn to accept all that is in a particular moment. Almost all of us go through similar vicious cycles of pain but we need to accept certain things and incidents where in all efforts to rectify were a waste."

The chat veers towards just one word - love. The cause of anger and ecstasy Swami says. "Love should not be restricted to an entity; on the contrary it should cover a larger area, moving from one individual to the whole world and then to the universe. Besides, it's important to be balanced and un-

Pendulating between hope and hopelessness? And endless webs of questions? Swami Chaitanya Keerti and Ma Neelam remind us of Osho.

Following the trail... Ma Yoga Neelam says:

- Osho never condemns or criticises anything. His teachings via meditation lead us to the path of self-transformation.
- Learn to focus on the inner self; second comes the desire for self transformation, third is picking up the right meditation techniques this will ultimately loosen your grip on the problems we face.
- Osho doesn't ask you to leave anything, any kind of renunciation. The teachings are all about adding new meaning to life.
- Self-exploration is very important. Love yourself and your body, turn all the energy in knowing what you are and what you are capable of. Explore the possibilities in you.
- The chaos of the outer world will not affect you if there's peace within.
- Rather than pointing finger towards someone else, turn the direction and ask what you are doing?
- Think of pain as gods tend to make you a better person. It depends how you take it and how you utilize your energies.
- Life is beautiful and it should be lived thoughtfully.

दुख को प्रकट कीजिए

अगर हम दुख से उत्पन्न भावों को दबाएंगे उसे सामान्य रूप से अभिव्यक्त नहीं करेंगे तो समझिए हम कई असाध्य बीमारियों और मानसिक समस्याओं के बीज बो रहे हैं।

जो अनैतिक अधुनिक और जिनसे दूरी होनी चाहिए, हम सनाता में दूर और जटिल होते जा रहे हैं। हमारे व्यवहार को समाधान प्रदान करने के लिए भी कठिन होना पड़ रहा है। अगर हम दुख से उत्पन्न भावों को दबाएंगे उसे सामान्य रूप से अभिव्यक्त नहीं करेंगे तो समझिए हम कई असाध्य बीमारियों और मानसिक समस्याओं के बीज बो रहे हैं। दुःख, दुर्दमनी, जीवन का अंधे हैं। प्रत्येक इंसान को इनसे रुबरू होना पड़ता है। सृष्टि का क्रम भर नहीं है। जीवन में सुख-दुःख अनुभव को महत्त्व देने से ही दुःख आप से दूर रह सकता है। प्रकट करने से मन हलक

